MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

VIDYAWARTA®

Special Issue, October 2019

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
तथा हिंदी विभाग और IQAC

बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय

बसमतनगर, जि.हिंगोली
Accredited by NAAC B+Grade

THE VISION STATMENT O THE COLLEGE IS

के संयुक्त तत्वावधान

आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन हिंदी साहित्य में

स्त्री चेतना

संपादक
डॉ.सुभाष क्षीरसागर
डॉ.रेविता कावले
डॉ.शेख रजिया शहेनाज

48) समकालीन हिन्दी उपन्यास साहित्य में स्त्री चेतना :
डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य', उस्मानाबाद ||126

49) 'अल्मा कबुतरी' उपन्यास में स्त्री-चेतना
प्रा. डॉ. गाडे ज्ञानेश्वर गंगाधरराव, हिंगोली ||129

50) "प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी चेतना"
प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ, परभणी ||131

51) संघर्षशील स्त्री
प्रा. डॉ. बेवले ए. जे., भोकरदन ||134

52) समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी चेतना
प्रा. डॉ. अर्जुन पवार, लातूर ||136

53) समकालीन हिंदी उपन्यासों में स्त्री चेतना
प्रा. डॉ. जानेअहमद के. जे. ||138

54) समकालीन हिंदी उपन्यास : स्त्री चेतना का यथार्थ
प्रा. डॉ. दीपक विनायकराव पवार, नांदेड ||140

55) 'पचपन खम्भे लाल दीवारे' - भारतीय नारी की सामाजिक-आर्थिक विवशताओं से जन्मी मानसिक यंत्रणा
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद, नांदेड ||141

56) समकालीन हिंदी उपन्यासों में स्त्री चेतना
प्रा. डॉ. गंगा लिबांजीराव गायके, अंबाजोगाई ||144

57) मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री-चेतना
डॉ. पुष्पलता काळे, लातूर ||146

58) 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में स्त्री विमर्श
प्रा. आर. एम. खराडे, उस्मानाबाद ||148

59) समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री चेतना आधुनिक नारी की सशक्त तस्वीर - दौड
प्रा. डॉ. राजश्री भामरे, अहमदपूर ||150

60) संजीव के धार उपन्यास में नारी चेतना
प्रा. वाघमारे सुधाकर च., धर्माबाद ||153

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

54

समकालीन हिंदी उपन्यास : स्त्री चेतना का यथार्थ

प्रा. डॉ. दीपक विनायकराव पवार
सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
दिगंबरराव बिंदू महाविद्यालय, भोकर जि. नांदेड (महाराष्ट्र)

समकालीनता की अवधारण कालसापेक्ष होने के कारण वर्तमान समय या यो कहे कि पिछले कुछ दशकों से लिखे जा रहे साहित्य को समकालीन साहित्य के दायरे में रखा जाता है। और उस साहित्य को समकालीन साहित्य कहा जाता है। इस साहित्य में रीतिकालीन काव्य की तरह न श्रृंगार परक वर्णन है और नही छायावादी काव्य की तरह रहस्यवाद का पुट है। समकालीन कविता सीधे-सीधे अपनी बात व्यक्त करती है। मानवीय जीवन के सहज भावबोध का समकालीन साहित्य सहजता के साथ व्यक्त करता है। वह चाहे कविता हो कहानी या अन्य कोई भी विधा ही क्यों न हो। समकालीन साहित्य किसी एक विचारधारा या किन्हीं एक प्रकार की समस्याओं को ही केंद्र में रखकर उभरकर नहीं आता अपितु जीवन के विभिन्न पक्षों पहलुओं को व्यक्त करते है। इसमें संवेदना के साथ विचारों को भी पर्याप्त मात्रा में जगह मिली है। समकालीन साहित्य के केंद्र में विमर्श भी है। वस्तुतः समकालीन साहित्य को विमर्शों का साहित्य कहना गलत नहीं होगा। क्योंकि जब हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्यिक प्रवृत्तियों को देखते है तो उन प्रवृत्तियों में स्त्री-जीवन की पीड़ा दलितों का संघर्ष, आदिवासी समुदाय की जल-जंगल और जमीन मी समस्या प्रमुखता से उभरकर आई हैं। कई लेखकोंने विमर्श केंद्रित साहित्य लिखा है मसलन कृष्णा सोबती, मैयेयी पुष्पा, अलका सरावजी, प्रभा खेतान गितांजलीश्री, नासिरा शर्मा, मंजूल भगत इत्यादी महिला कथाकारोंने स्त्री जीवन को केंद्रित साहित्य क सृजन किया है। इन कथाकारों के साहित्य का सूक्ष्म अध्ययन करने पर हमें ज्ञात हो जायेगा कि इनका साहित्य भारतीय जन-मानस में स्त्री जीवन के लगभग सभ पहलुओं को अंकित करता है। स्त्री रचनाकार केवल स्त्री जीवन के बाह्य सौंदर्य (जीवन-दर्शन) को ही व्यक्त नहीं करती अपितु स्त्री मन की अभिव्यंजनाओं, संवेदनाओं एवं उसके भाव विश्व को भी दर्शाती है। इनके साहित्य में व्यक्त नारी किसी एक विशेष वर्ग की नारी नहीं है अपितु समर्ग वर्गों एवं भिन्न-भिन्न परिस्थितियों एवं संस्कारों से लिप्त नारी के अंतर्मन व उसके मुक्ति की कामना को प्रमुखता दी हे। मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य नारी मुक्ति की, स्त्री चेतना की वकालत करता है। वे किसी भी प्रकार के पितृसत्तात्मक, बंधनों, प्रभवों को अस्वीकार करती है। अलका सरावजी अपने उपन्यास 'कलिकथा: वाया बाईपास' में किशोर की विधवा माँ के माध्यम से रूढ़िग्रस्त मारवाडी परिवार के यथार्थ को चित्रित करती है। उनका मानना है कि मारवाडी समाज में नारी पर कई प्रकार के बंधन लगाये जाते हैं, वह अपना जीवन चार दिवारों के बीच ही गुजारती है, न ही उसे मनचाहे कपडे पहनने की आझादी है और न ही वह स्वतंत्र रूप से जीवन यापन कर सकती है। विधवा विवाह की परिकल्पना भी वहाँ नहीं है। अलका सरावजी अपने कथा साहित्य में स्त्री-प्रथाओं के जकड़न में कैद स्त्री के भाव विश्व के दर्शाकर मारवाडी समाज की मानसिकता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है। अपने पात्रों के माध्यम से रूढ़ि बंधनों को तोड़ने का प्रयास भी करती है, उदा. के लिए उस संवाद को देख सकते हैं जिसमें लेखिका किशोर के माध्यम से कहती है - "तुम्हें भी शांता भाभी की शादी फिर से करनी चाहिए। यह बिसवीं शताब्दी है, माय डियर।" इस प्रकर अलका सरावजी वैवध्य की पीड़ा से स्त्री को मुक्त कराना चाहती है। मैत्रेयी पुष्पा ने भी अपने कथा साहित्य में इसी प्रकार विधवा के जीवन की स्थितियों को चित्रित करके विधवा स्त्री के दुखों से परिचय कराने का प्रयास किया है।

नारी जीवन को लेकर अब तक कई ऐसे पहलु हैं जिनपर मुखरता से चर्चा नहीं की जाती, स्त्री आज भी खामोशी से उन सारी पीड़ाओं को अपने अंदर दबाए रखती हैं। किंतु वर्तमान समय खामोश बैठने का नहीं है, ऐसे में जरुरी नहीं कि स्त्रियाँ भी अपने दुख को दबाकर बैठ जाए, उन्होंने अब बोलना शुरू किया है। अपन नीजी जीवन संबंधित तथ्यों को भी कथा-कहानी के माध्यम से व्यक्त कर रहीं है। इदन्नमम दिलोदानिश, छिन्नमस्ता, कठगुलाब आदि उपन्यासों में स्त्री कथाकारोंने उन्मुक्त यौन संबंधों की और ध्यान आकृष्ट किया है। इदन्नमम उपन्यास के पात्र 'प्रेम' जवानी में ही विधवा होने के कारण रतनसिंह यादव के साथ प्रेम संबंध रखती है। साथ-ही साथ हम देखते हैं कि इन कथाकारोंने स्त्री अधिकारोंकी बात भी की है। जो स्त्री हजारों वर्षों से गुलामी का जीवन जी रहीं है, उसकी संवेदना को भी समकालीन नारी कथा-साहित्य मंच प्रदान करता है। महिला कथाकार स्त्री पात्रों को असहाय नहीं दर्शाते हैं। नारी का चित्र सक्षम रूप में उभरकर आ रहा है।

जिस नारी जाति को अब तक केवल शोषण मात्र के लिए समझा गया, उन्हें सम्मान से जीने का अधिकार भी नहीं दिया गया था। पराधिनता बोध में जीवन यापन कर रहीं स्त्री असह्य दुखों को सहने के लिए विवश थी और आज भी यथा स्थिति बनी हुई है। आज महानगरों में जीवन यापन करनेवाली स्त्रियाँ तथा ग्रामीण ईलाकों में जी रहीं स्त्रियाँ, दोनों के जीवन में भिन्न परिस्थितीयों में भिन्न-भिन्न

जकड़नों में बंदिस्त है। वह आज भी पुरी तरह से मुक्त नहीं हो पायी है। स्त्री के प्रति देखने क दृष्टिकोन आज भी वहीं बना हुआ है। उपरोक्त महिला कथाकार उस नजरियें को बदलना चाहती है। मृदला गर्ग अपना उपन्यास 'कठगुलाब' एवं मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' उपन्यास नारी जीवन की त्रासदी के व्यक्त करता है। 'कठगुलाब' उपन्यास की पात्र स्मिता अपने जीवन में आये कष्टों को सहती है किंतु चाहकर भी विद्रोही नहीं बनती। शोषणकारी जीजा को केवल हत्या करने का दिवास्वप्न ही देखती है लेकिन 'चाक' उपन्यास की पात्र 'सारंग' एक विद्रोही, क्रांतिकारी एवं आधुनिक स्त्री के रूप में उभरकर आती है। जो पढ़ि-लिखी है। अन्याय के विरूद्ध खड़े रहने का साहस करती है। अपनी बहन के हत्यारों को सजा देने के लिए पुरे गाँव से दुश्मनी मोल लेती है। मैत्रेयी पुष्पा का महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'इदन्नमम' नारी जीवन की संघर्ष गाथा को व्यक्त करता है। प्रस्तुत उपन्यास की पात्र मंदा सभी प्रकार के बंधनों को तोड़ती ही नहीं अपितु शोषण के खिलाफ तनकर खड़ी होती है। उसका संघर्ष व्यक्तिगत संघर्ष न रहकर सामाजिक परिप्रेक्ष्य धारण करता है।

इसप्रकार हम देख सके है कि समकालीन महिला उपन्यासकारों में मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, चित्रा मुदगल, अलका सरावजी इत्यादिने अपने सृजनात्मक साहित्य के द्वारा नारी विमर्श कों एक अलग दिशा देने का कार्य ही नहीं किया अपितु स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त किया है। उनका लेखन नारी जीवन को आधार प्रदान करता है। रूढ़ि-प्रथा परंपराओं को तोड़ने को साहस प्रदान करता है, किसी भी प्रकार के पितृसत्ताक शोषण को नकारता है। इन कथाकारों ने केवल संघर्षशील स्त्री का चित्रण ही नही किया वरन एक सक्षम, निर्भर स्वतंत्रवेत्ता नारी को भी दर्शाया है। इन लेखिकाओंने स्त्री-प्रश्न को सामुहिक रूप में उठाया है। इस लेखन की सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कल्पना प्रधान होकर भी जीवन की यथार्थ परक अभिव्यक्ति है। समकालीन समाज का यथार्थ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. समकालीन हिंदी उपन्यास की आधुनिकता - डॉ.प्रतिभा पाठक
२. स्त्रीवाद लेखन - उपलब्धि -डॉ.प्रज्ञा शुल्क
३. नारी चिन्तन नयी चुनौतियाँ - डॉ.रामकुमारी गडकर
४. अंतिम दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी - डॉ.रामचंद्र माळी
५. स्त्रीवादी विमर्श - डॉ.राकेशकुमार
६. छिन्नमस्ता - प्रभा खेतान
७. कठगुलाब - मृदुला गर्ग
८. चाक - मैत्रेयी पुष्पा
९. कलि-कथा : वाया बाइपास - अलका सरावगी
१०. इदन्नमम् - मैत्रेयी पुष्पा

❑❑❑

55

'पचपन खम्भे लाल दीवारे' - भारतीय नारी की सामाजिक-आर्थिक विवशताओं से जन्मी मानसिक यंत्रणा

डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
हिंदी विभागाध्यक्ष,
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय हिमायतनगर,
ता.हिमायतनगर, जि.नांदेड

****

उषा प्रियंवदा की गणना हिन्दी के उन कथाकारों में होती है, जिन्होंने आधुनिक जीवन की ऊब, छटपटाहट, संत्रास और अकेलेपन की स्थिति को अनुभूति के स्तर पर पहचाना और व्यक्त किया है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में एक ओर आधुनिकता का प्रबल स्वर मिलता है तो दूसरी ओर उनमें चित्रित प्रसंगों तथा संवेदनाओं के साथ हर वर्ग का पाठक तादाम्य का अनुभव करता है, यहाँ तक कि पुराने संस्कारवाले पाठकों को भी किसी तरह के अटपटेपन का एहसास नही होता। पचपन खम्भे लाल दीवारे उषा प्रियंवदा का पहला उपन्यास है, जिसमें एक भारतीय नारी की सामाजिक, आर्थिक विवशताओं से जन्मी मानसिक यंत्रणा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है। छात्रावास के पचपन खम्भे और लाल दीवारें उन परिस्थितियों के प्रतीक है जिनमें रहकर सुषमा को ऊब तथा घुटन का तीखा एहसास होता है, लेकिन फिर भी उनसे वह मुक्त नही हो पाती, शायद होना नही चाहती। उन परिस्थितियों के बीच जीना ही उसकी नियति है। आधुनिक जीवन की यह एक बड़ी विडंबना है कि जो हम नही चाहते, वही करने को विवश है। लेखिका ने इस स्थिति को बड़े ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया है।

'पचपन खम्भे लाल दीवारें' की नायिका जब एम.ए. हुई तब से आज तक नौकरी कर रही है। नौकरी करना उसकी विवशता है। उसकी सुंदरता को देखकर कॉलेज के सेक्रेटरी, जो पुराने रईस थे, कई प्रलोभन उसके सम्मुख रखे थे। अपने शरीर का मोल देकर वह धन और आराम पा सकती थी। परंतु उसने स्वीकार नही किया। नौकरी उसके लिए बहुत कीमती थी। पहली नौकरी ऐसे कारणों से जब उसने छोड़ी तब पिताजी सालभर से बीमार थे और बिना वेतन के छुट्टी पर थे। माँ ने कहा भी कि अब इन बच्चों का क्या होगा? उसने कभी यह नही जाना कि उसने नौकरी क्यो छोडी? न कभी ढाढ़स बँधाया। हर बार जब आर्थिक कठिनाईयाँ आती तो वह अपना